हिन्दी का उद्भव

- इतिहास – अतीत को घटनाओं का आलेख है
  साहित्येतिहास- अतीत को साहित्यिक घटनाओं का आलेख है

- जिस प्रकार इतिहास म सभी घटनाओं का महत्त्व नहों है, उसी प्रकार सभी साहित्यिक घटनाएँ भी महत्त्वपूण नहों होती ह| जिन साहित्यिक घटनाओं से वतमान साहित्यिक सृजन के बोध तथा मानवीय मूल्यों को परंपरा तथा व्याख्या म सहायता मिलती है वही साहित्यिक घटनाएँ महत्त्वपूण होती ह|
  उदाहरण- रामचरितमानस/पद्मावत/कबीर के पद इत्यादि

- किसी भी भाषा का साहित्य अचानक उत्पन्न नहों हो जाता, इसको उत्पत्ति तथा विकास म युगों को प्रवाहित विचारधाराएँ सिमटी रहती ह |

- हिन्दी साहित्य का विकास भी कुछ इसी प्रकार हुआ|

- ऐतिहासिक रूप से प्रथम ज्ञात पठनीय भाषा है वैदिक संस्कृत| इसके व्याकरणबद्ध होकर साहित्यिक भाषा बन जाने के पश्चात जनभाषा लौकिक संस्कृत विकसित तथा प्रचलित होने लगी|

- भाषाओं का क्रमिक विकास इस प्रकार है-
  लौकिक संस्कृत
  पालि
  प्राकृत
  अपभ्रंश

उत्तर अपभ्रंश/अवहट्ठ/पुरानी हिन्दी

- चंद्रधर शमा 'गुलेरी' जी ने सवप्रथम अवहट्ठ के लिए पुरानी हिन्दी नामकरण किया|

- अपभ्रंश का वास्तविक समय अनुमानतः १००० संवत् है| अपभ्रंश को अंतिम अवस्था और पुरानी हिन्दी म एकरूपता है|
  इसलिए हिन्दी साहित्य के आदिकाल म अपभ्रंश तथा उत्तर अपभ्रंश को भी रचनाएँ जानना आवश्यक है , क्योंकि आगे चलकर जब हम हिन्दी को और बढ़ाते ह तो इनके कई व्याकरणिक रूप हिन्दी म पूरी तरह अपना लिए गए ह|

- हिन्दी प्रदेश म हिन्दी को कुल ५ उपभाषाएं ह-
  १. उपनागर अपभ्रंश से विकसित राजस्थानी हिन्दी
  २. शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिन्दी
  ३. अधमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी हिन्दी
  ४. मागधी अपभ्रंश से विकसित बिहारी हिन्दी
  ५. खस अपभ्रंश से विकसित पहाड़ी हिन्दी

- राजस्थानी हिन्दी उपभाषा के अंतगत ५ बोलियां ह-
  १ मारवाड़ी
  २ जयपुरी/ढूंढाड़ी
  ३ मेवाती
  ४ मालवी
  ५ निमाड़ी

- पश्चिमी हिन्दी उपभाषा के अंतगत ५ बोलियाँ ह-
  १ कौरवी/ खड़ी बोली

२ हरयाणी/ बांगरू
३ ब्रजभाषा
४ बुन्देली
५ कन्नौजी

- पूर्वी हिन्दी उपभाषा के अंतगत ३ बोलियाँ ह-
  १ अवधी
  २ बघेली
  ३ छत्तीसगढ़ी

- बिहारी हिन्दी उपभाषा के अंतगत ३ बोलियाँ ह-
  १ भोजपुरी
  २ मैथिली
  ३ मगही

- पहाड़ी हिन्दी उपभाषा के अंतगत २ बोलियाँ ह-
  १ कुमायूँनी
  २ गढ़वाली